>

Title: The Minister of External Affairs made a statement regarding adoption of 21st June as International Day of Yoga by 69th session of UN General Assembly

विदेश मंत्री तथा प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : माननीय अध्यक्ष महोदया, हम सभी ने संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून को भारत की पहल पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किए जाने का सुखद समाचार 11 दिसम्बर की शाम को सुना। एक भारतीय होने के नाते इस सुखद समाचार पर वक्तव्य देते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। सर्वप्रथम मैं इस पुनीत सदन का ध्यान हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की इस व्यक्तिगत पहल को संयुक्त राष्ट्र संघ में मिले अभूतपूर्व समर्थन की ओर आकृष्ट करना चाहूंगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के वार्षिक कैलेंडर में तकरीबन 118 दिवसों/वर्षों या वर्षगांठों को सूचीबद्ध किया गया है। 11 दिसम्बर को संयुक्त राष्ट्र संघ के कुल 193 देशों में से 177 देश अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रस्ताव के सह प्रायोजक बने, को-स्पोंसर बने।

माननीय अध्यक्ष महोदया, संयुक्त राष्ट्र संघ में इस प्रकार के किसी भी प्रस्ताव पर सह प्रायोजकों की यह सर्वाधिक संख्या है। आज तक सबसे ज्यादा संख्या है, जो इस प्रस्ताव के सह प्रायोजकों को मिली है। सह प्रायोजक का अर्थ है कि इन राष्ट्रों ने न केवल भारत का समर्थन किया, अपितु इस पहल को स्वीकारने की अपनी सार्वजनिक इच्छा भी व्यक्त की।

यह भारतीय कूटनीति की विजय है कि सह प्रायोजकों की सूची इतनी लंबी है। जहां एक ओर हमें सुरक्षा परिषद के सभी पांच स्थायी सदस्यों का समर्थन मिला, वहीं दूसरी ओर हमें प्रशांत क्षेत्र के छोटे द्वीप समूह वाले उन देशों का भी समर्थन मिला जिनके साथ प्रधान मंत्री जी ने अपनी फीजी यात्रा के दौरान भेंट की थी। हमें अफ्रीका के मध्य से लेकर समूचे यूरोप तक, दक्षिण एशिया के हमारे पड़ोसी राष्ट्रों से लेकर सुदूर कैरेबियाई और लैटिन अमेरिका के हमारे मित्रों तक सभी का समर्थन मिला। सभी एक स्वर में हमारे समर्थन में उठ खड़े हुए।

मेरा ऐसा मानना है कि सभी क्षेत्रों से मिला व्यापक समर्थन हमें दो चीजें दर्शाता है। पहला, यह इस बात का प्रतिबिंब है कि भारतीय संस्कृति की समृद्ध धरोहर विशेषकर योग के प्रति विश्वव्यापी रूझान है। हालांकि हम सभी योगी नहीं बन सकते लेकिन योग को अपनी दिनचर्या में शामिल कर हम तन और मन के बीच एकात्मकता तथा प्रकृति के साथ तादात्मय स्थापित कर सकते हैं।

इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को मिला व्यापक समर्थन और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा इसको हृदय से स्वीकारना यह दर्शाता है कि किस प्रकार प्राचीन भारतीय परम्पराएं विश्व की आज की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करती हैं। जैसा कि प्रधान मंत्री जी ने न्यूयार्क में कहा योग सदियों पुराने भारतीय दर्शन को अभिव्यक्त करता है और मनुष्य और प्रकृति के बीच समग्रता लाता है। यहां मैं प्रधान मंत्री जी के भाषण के कुछ अंश उद्धत करना चाहूंगी। उन्होंने कहा --- "योग हमारी पुरातन पारम्परिक अमूल्य देन है। योग मन व शरीर, विचार व कर्म, संयम व उपलब्धि की एकात्मकता का तथा मानव व प्रकृति के बीच सामंजस्य का मूर्त रूप है। यह स्वास्थ्य व कल्याण का समग्र दृष्टिकोण है। योग केवल व्यायाम भर न होकर अपने आप से तथा विश्व व प्रकृति के साथ तादात्मय स्थापित करने का माध्यम है"।

माननीय सदस्यगण, 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा के अपने प्रथम संबोधन में माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस प्रस्ताव को आधिकारिक तौर पर रखा था। उसके ठीक 75 दिनों के भीतर शुक्रवार 11 दिसम्बर को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया। जिस शीघ्रता के साथ इस प्रस्ताव को रखा और स्वीकारा गया यह अपने आप में एक उपलब्धि है।

इस प्रस्ताव को मिला अपार समर्थन और इतनी सुगमता के साथ इसका स्वीकार किया जाना हमारी सरकार द्वारा विश्व स्तर पर किए गए कूटनीतिक प्रयासों का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मैं इसे नए भारत की कूटनीतिक सफलता का एक महत्वपूर्ण घटक मानती हूं। "मेक इन इंडिया", "स्वच्छ भारत" और अब "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" ये सभी जीवंत, खुशहाल और समृद्ध भारत की हमारी यात्रा के ऐसे पड़ाव हैं जिनकी छाप और जिनका प्रभाव हमारी सीमाओं के परे भी महसूस किया जा रहा है। विश्व के प्रमुख योग संगठनों ने हमारे प्रस्ताव व हमारी पहल को हृदय से सराहा है।

इससे पूर्व वर्ष 2007 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी जी के जन्म दिन 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किए जाने के भारतीय प्रस्ताव को पारित किया था। अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस दोनों मिलकर अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत के विशिष्ट योगदान को दर्शाते हैं। इन दोनों पहलों का सार समग्र भारतीय दर्शन की अभिव्यक्ति है जिसे हम "वसुधैव कुटुम्बकम" कहते हैं अर्थात् सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। मैं तो यहां तक कहूंगी कि यह सम्पूर्ण भारतीय जीवनशैली का परिचायक है -- विश्व के सामने उपस्थित समस्याओं के समाधान की ओर एक रचनात्मक पहल; जो हमारे पर्यावरण के साथ तादात्मय में हो।

जैसा कि मैंने 3 दिसम्बर को लोक सभा में कहा था, हमारी वैश्विक आकांक्षाओं की पूर्ति विश्व को अपने साथ लेकर चलने से पूरी हो सकती है। अध्यक्ष महोदया, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की घोषणा विश्व को अपने साथ लेकर चलने की हमारी सरकार की प्रतिबद्धता की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मैं संसद के अपने सभी साथियों को आश्वस्त करना चाहूंगी कि आने वाले दिनों में भी हम विश्व को अपने साथ लेकर चलने के अपने अनवरत संकल्प को दर्शाते रहेंगे।

जहां एक ओर हमने भारत और सम्पूर्ण दक्षिण एशिया को समृद्ध बनाने के लिए सक्रिय और अभिनव प्रयोगों की लगातार वकालत की है, वहीं दूसरी ओर हम भारत की "सॉफ्ट पावर" जिसमें शामिल हैं भारत की समृद्ध संस्कृति और उसके लोगों की विविधता और विशिष्टता, इसको विश्व के सामने लाने के नए उपायों पर विचार करते रहेंगे और उन पर काम भी करते रहेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

12.10 hrs